परिचय (Introduction)

भूगोल में द्वैतवाद
(Dualism in Geography)

भौगोलिक चिन्तन के इतिहास में भूगोल की प्रकृति का यह लक्षण प्रारम्भ से वर्तमान तक दृष्टिगोचर होता है कि वह प्राकृतिक विज्ञान (भौतिक भूगोल) तथा सामाजिक विज्ञान (मानव भूगोल)– इन दो भागों में द्विविभाजित (dichotomy) है। क्योंकि दोनों के अध्ययन की विषय-वस्तु (objects) भिन्न-भिन्न हैं, इसलिये उनके उपागमों एवं अध्ययन विधियों (methods) में द्वैतवाद (dualism) कई बार प्रमुखता से उभरता रहा है। यह भूगोल की प्रकृति की बार-बार होने वाली (recurrent) घटना है जो हर बार एकीकरण (integration) के सफल प्रयासों से एकीकृत विषय बनाया जाता रहा है। भौगोलिक चिन्तन में भूगोल की जो विविधात्मक प्रकृतियां बनीं, उन चिन्तनों की एक प्रेरक शक्ति भूगोल को एकीकृत करने की आवश्यकता भी रही है। यद्दपि द्वैतवादी चिन्तन कई बार उभरा, लेकिन विषय के द्विविभाजन के अतिवादी विचार हम्बोल्ट्ट-रिट्टर की मृत्यु तथा चार्ल्स डार्विन के Origin of Species के प्रकाशन वर्ष 1859 के बाद तथा रैटजेल की Anthropogeographie के प्रथम प्रकाशन, 1882 के मध्य सबसे प्रखर रूप में उभरे। इस द्वैतवादी चिन्तन की नवीनतम कड़ी भूगोल में आधुनिकवाद (modernism) तथा उत्तर-आधुनिकवाद (post-modernism) है। क्योंकि वर्तमान उत्तर-आधुनिक भूगोल मानव-पर्यावरण तन्त्र के प्रासंगिक (relevant) विषयों पर केन्द्रित है और इनके अध्ययन के लिये भूगोल की सभी परम्पराओं के प्रयोग को इस मानव जीवनयुक्त विश्व को बेहतर समझने का उपकरण स्वीकार करता है, इसलिये द्वैतवाद अब केवल उन आभासी (apparent) विपरीत दशाओं का परिचय है जो वर्तमान महा-एकीकरण (mega-integration) के संघटक युग्म हैं।

द्विविभाजन, द्वैतवाद तथा एकीकरण का सामान्य सर्वेक्षण
(Overview of Dichotomy, Dualism, and Integration)

प्राचीन सभ्यताओं के क्षेत्रों एवं बाद में ग्रीक तथा रोमन भूगोल में,विद्वान अपनी पृथ्वी को कौतूहल के साथ जानने के प्रारम्भिक प्रयासों में संलग्न थे तथा समाज सीमित जानकारी से उसका उपयोग कर रहा था। ज्ञात धरातलीय वर्णन (topographical descriptions) तथा कोस्मोग्राफी (cosmography), जिसमें पृथ्वी सम्बन्धी सभी प्रकार की जानकारी का समावेश होता था, प्रचलित था। हेरोडोटस (425 ई.पू.) तथा इरेटोस्थनीज (194 ई. पू.) ऐसा ही भूगोल बना रहे थे। टॉलमी (168 ई.) का भूगोल (8 खण्ड) पृथ्वी की नाप-जोख तथा मानचित्र का विवरण है।, मनुष्य का उसमें कोई स्थान नहीं है। स्ट्रैबो (20 ई.) ने Gepgraphica (17 खण्ड) में स्थानों में मानव समुदायों की सांस्कृतिक विशिष्टता तथा उसके लिये प्राकृतिक दशाओं के महत्व को इटली के संदर्भ में बताया तथा भूगोल को प्राकृतिक दशाओं तथा मानव क्रियाओं दोनों का अध्ययन बताया। स्ट्रैबो ने भूगोल की परिभाषा में इसे व्यापक ज्ञान बताया जिसको रखने वाला व्यक्ति वही हो सकता है जिसने मानवीय तथा दैविक (प्राकृतिक) तत्वों (things both human and devine) की गवेषणा की हो। मानव एवं प्राकृतिक (भौतिक) तत्वों का द्वैतवाद भूगोल में इसके बाद वर्तमान समय तक बना रहा तथा भौतिक भूगोल में गवेषणा प्राकृतिक विज्ञान की विधि से होनी चाहिये जो मानव भूगोल पर लागू नहीं होती– ऐसे विचार आने लगे।

1. बर्नहार्ड वारेनियस (1650) ने पहली बार भौतिक भूगोल और मानव भूगोल की प्रकृति के मूल अन्तर को बताया तथा साथ ही भूगोल लेखन के लिये (i) सामान्य भूगोल (geographia generalis, 1950)– क्रमबद्ध भूगोल (systematic) तथा (ii) विशेष भूगोल (प्रादेशिक-regional) की योजना बनाई जिसमें मानव दशाओं का अध्ययन भूगोल में प्राकृतिक तथा मानव दोनों के तत्वों को सम्मिलित करने की पूर्व परम्परा को रियायत (concession) देने के लिए शामिल किया। इस प्रकार वारेनियास ने (i) भौतिक भूगोल-मानव भूगोल का द्विविभाजन (ii) क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल का द्वैतवाद और (iii) भौतिक भूगोल की विशुद्ध विधि (precisely correct) का मानव भूगोल में प्रयोग न किया जा सकना पर्याप्त स्पष्टत: रेखांकित किया। कान्ट (1804) ने भूगोल को तत्वों (भौतिक तथा मानवीय) के एक स्थान में सापेक्षिक स्थिति (position) का विज्ञान स्थापित कर उसे आवश्यक स्थानिकक्रम विज्ञान (chorology) बनाकर वारेनियस द्वारा संकेतित द्वैतवाद के स्थान पर एकीकृत विज्ञान बना दिया। इस तार्किक प्रस्ताव के भूगोल की प्रकृति पर दूरगामी प्रभाव पड़े जब हैटनर (1927) तथा हार्टशोर्न (1939) ने भूगोल के इसी रूप को उसकी वास्तविक प्रकृति बताया। स्वयं वारेनियस अपने द्वारा संकेतित द्वैतवाद को एक दूसरे का पूरक मानता थाा।
2. 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षो से ही छायावादी दर्शन (romanticism) की पृष्ठभूमि में हम्बोल्ड्ट एवं रिट्टर (1959) ने विश्व की एकता (Ganzhiet-wholeness) को आनुभाविक (empirical) अर्थात् भौतिक विश्व का पर्यवेक्षण (observation) कर, तुलनात्मक एवं आगमनिक विधि (inductive method) से समझने का भीमकाय (colossal) प्रयास किया। यद्दपि छायावादी दर्शन भौतिक विश्व को परम् वास्तविकता की छाया मात्र मानता है, परन्तु उस तक पहुंचने के लिये इस छाया का ज्ञानार्जन उपयोगी

समझता है। उपर्युक्त उद्देश्य एवं विधियों में समानता होते हुये भी हम्बोल्ड्ट का झुकाव प्राकृतिक तत्वों को क्रमबद्ध विधि से कारण-प्रभाव द्वारा जानने की ओर था, जबकि रिट्टर का झुकाव मानवीय तत्वों को प्रमुखता देकर प्रादेशिक विधि से ईश्वर-प्रदत्त विश्व को जानने की ओर था। फलस्वरूप दो विधियां विकसित हुई– हम्बोल्ड्ट के Cosmos की क्रमबद्ध विधि (systematic method) जो प्राकृतिक तत्वों के अध्ययन में प्रयुक्त होती है तथा रिट्टर के Erdkunde की प्रादेशिक विधि (regional method) जो प्राकृतिक तत्वों एवं मानव तत्वों के स्थान में पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करती है। इन दोनों विधियों को भूगोल के सम्पूर्ण कार्यक्रम के लिये पूरक समझा गया है लेकिन उनके बाद उन दोनों विधियों के एक दूसरे से भिन्न होने के पहलू पर द्वैतवादी विवेचन उभरा।

3. हम्बोल्ड्ट के अनुयायी नहीं थे लेकिन रिट्टर के अनुयायियों ने मानव-केन्द्रित तुलनात्मक प्रादेशिक अध्ययनों में प्राकृतिक तत्वों की घोर उपेक्षा की। भूगोल, इतिहास (मानव क्रियाओं) की व्याख्या का एक सहायक विषय मात्र रह गया। साथ ही डार्विनवाद ने रिट्टर के ईश्वर-उद्देश्यवाद (talcology) का खण्डन किया तथा प्रकृति के रहस्यों को प्रक्रम (process) से समझने की संभावना अस्तित्व में आ गई। इस दशा में कुछ भूगोलवेत्ता भूगोल को प्राकृतिक तत्वों के क्रमबद्ध अध्ययन तक सीमित रखने का तर्क देने लगे। इनमें पैशेल की Neue Probleme der vergleischenden Erdkunde als Versuch einer Morphologie der Erdfloche (Pechel, 1870) (अर्थात् तुलनात्मक भूविज्ञान की नई समस्या, पृथ्वी सतह की आकारिकी की खोज के रूप में), पुस्तक में यह नया चिन्तन प्रमुख है। उसने विचार प्रस्तुत किया कि भूगोल को कारण-प्रभाव के रूप में भूआकृतियों का मानव के ऐतिहासिक विकास की भूमिका में अध्ययन करना चाहिये तथा भूगोल को मुख्यत: भूआकृतियों के क्रमबद्ध तथा आनुभविक अध्ययन का विषय होना चाहिये। रिट्टर के विचारों के अनुयायियों तथा इन नये विचार वाले भूगोलवेत्ताओं में मानव-प्रधान प्रादेशिक भूगोल तथा भौतिक तत्व-प्रधान क्रमबद्ध भूगोल का द्वैतवाद तीव्र हो गया। हम्बोल्ड्ट के कार्य को आधार बनाकर भौताकृति (physiography) तथा भूआकृति (geomorphology) अध्ययनों की प्रधानता हो गई तथा जरलैण्ड (जर्मन) ने 1887 में मानवीय तत्वों को भूगोल से पूर्णत: हटा देने का प्रस्ताव भी कर दिया। रिट्टर की मृत्यु तथा डार्विनवाद के प्रारंभ के वर्ष 1859 से रैटजेल की पुस्तक Anthropogeographie के प्रकाशन 1882 तक भौतिक तथा मानव भूगोल के द्विभाजन एवं तत्वसम्बन्धी अलग-अलग विधियों का द्वैतवाद भौगोलिक चिन्तन के इतिहास में सर्वाधिक प्रखर रहा।

इस बार भी भूगोल के द्वैतवाद को एकीकरण (integration) में बदलने का कार्य रैटजेल (1904) तथा रिचथोफन (1905) ने किया। अपनी प्रसिद्ध विधितन्त्रीय पुस्तक Anthropogeographie में रैटजेल ने भूगोल को मानव-प्रकृति (man-nature) अन्तर्सम्बन्ध के विज्ञान के रूप में सशक्त ढंग से स्थापित कियां इस नई दिशा के निर्माण में डार्विनवाद का प्रभाव था। रिचथोफन ने भी भूसतह पर भौतिक, जैविक तथा मानवीय तत्वों के संश्लेषण के विज्ञान के रूप में भूगोल को क्षेत्र-विवरण विज्ञान (chorographical science) बनाकर द्वैतवाद को समाप्त किया। भूगोल अब मानव-पर्यावरण के सम्बन्ध का अध्ययन करने वाला विज्ञान बन गया था।

4. प्रादेंशिक-ईडियोग्राफिक (व्यक्तिगत प्रदेशों का विवरण) विज्ञान तथा सैद्धान्तिक-नोमोथैटिक विज्ञान के रूप में द्वैतवाद 1950 के दशक में उभरा जिसमें बड़ी संख्या में अग्रणी भ्भूगोलवेत्ता सम्मिलित थे। भूगोल की मानव-पर्यावरण सम्बन्ध के विज्ञान के रूप में जर्मनी में– प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा मानव एवं उसके क्रियाकलापों का निश्चय होता है– यह दृष्टिकोण निश्चयवाद के नाम से प्रचलित हुआ तथा फ्रांस, ब्रिटेन तथा यू.एस.ए. पहुंच। 1911-20 के दशक में यह अपने चरम पर था तथा तभी सम्भववादी मानव-पर्यावरण सम्बन्ध के विचार मुख्यत: फ्रांस में, विकसित हुये। इसी समय फ्रांस में प्रादेशिक भूगोल का विकास हुआ तथा कार्ल सॉर की Morphology of Landscape, 1925; हैटनर की Geography–Its History, its Nature and its methods, 1927 और हार्टशोर्न की The Nature of Geography, 1939 ने भूगोल को प्रदेशों (regions) के अध्ययन का विज्ञान बनाया तथा उसी के अनुरूप भौगोलिक कार्य हो रहे थे। इस भूगोल की विधि ईडियोग्राफिक थी जिसमें अलग-अलग प्रदेश का विवरण दिया जाता है। शेफर के द्वारा इसे सामान्य सिद्धांत निर्माण करने वाला विज्ञान बनाने का प्रस्ताव किया गया तथा यह मात्रात्मक क्रान्ति का सैद्धांतिक भूगोल बन गया। इसकी विधि नोमोथैटिक (सामान्य नियम बनाना) है। 1970 से पूर्व ही मात्रात्मक क्रान्ति के परित्याग के बाद भी भूगोल का ईडियोग्राफिक तथा नोमोथैटिक द्वैतवाद पूर्णत: समाप्त नहीं हुआ है। ईडियोग्राफिक विधि में कला की प्रमुखता होती है तथा नोमोथैटिक में विज्ञान की।

5. मध्य-1980 के दशक से आधुनिक भूगोल एवं उत्तर आधुनिक भूगोल का द्वैतवाद भी उभरा है। मात्रात्मक क्रान्ति का मानव मूल्य-निरपेक्ष भूगोल के विपरीत उत्तर-आधुनिक भूगोल मानव मूल्यों एवं मानव को केन्द्रीय महत्व देता है। यह अति-विशाल सामान्य सिद्धांत/नियम बनाने से दूर रहता है तथा विशिष्टताओं तथा मतों की विविधता को महत्व देता है।

विभिन्न कालों में द्वैतवाद का उदय हुआ, तथा उसका अवसान भी

परिचय (Introduction)

हुआ। इन द्वैतवादों का मौलिक कारण भूगोल की अध्ययन-सामग्री का पृथ्वी की सतह का होना है जिसमें प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों तत्व हैं। उसके प्राकृतिक तत्व प्राकृतिक विज्ञान तथा मानव सम्बन्धी तत्व सामाजिक विज्ञान (तथा मानविकी कला) के अन्तर्गत आते हैं। इसलिए भूगोल के लिये एक सामान्य विधि स्वीकार्य नहीं रही, जिससे विभिन्न प्रकार के द्वैतवाद उत्पन्न हुये। ये द्वैतवाद भी भौगोलिक चिन्तन के इतिहास तथा भूगोल की प्रकृति को जानने के लिए आवश्यक हैं–

1. भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल।
2. क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रादेशिका भूगोल।
3. आगमनिक विधि तथा निगमनिक विधि।
4. ईडियोग्राफिक तथा नोमोथैटिक विज्ञान।
5. भूगोल प्राकृतिक विज्ञान तथा कला-सामाजिक विज्ञान।
6. आधुनिक तथा उत्तर-आधुनिक भूगोल।

भूगोल के विकास के इतिहास में उपर्युक्त सभी विषयों की विस्तृत चर्चा उनसे सम्बन्धित काल के संदर्भ में ही समझी जा सकती है। फिर भी इनका परिचयात्मक संक्षिप्त विवेचन, द्वैतवाद के दृष्टिकोण से किया जा सकता है। इसे भूगोल के उद्विकास की गति (movement) की सामान्य दिशा के ढांचे में देखना अर्थपूर्ण होगा। इस गति के उत्प्रेरक कारणों (motivational reasons) पर ध्यान दिये बिना, केवल गति की सामान्य दिशा (broad direction)– पृथ्वी के विराट स्वरूप की जानकारी से पृथ्वी-मानव के लिये प्रासंगिक विषयों पर ध्यान केन्द्रण बिन्दु (focal point) की ओर, की बड़ी अवस्थायें ये रही हैं– (i) पृथ्वी के खगोलीय लक्षण (astronomical character of the earth) 168 ई.– टॉलमी तक, (ii) पृथ्वी की सतह की हर प्रकार की सम्भव जानकारी (cosmography) 1859– रिट्टर तक, (iii) पृथ्वी की सतह के मानव समाज का उसके पर्यावरण से अन्तर्सम्बन्ध को समझना (man-environment interrelationship) 1925 कार्ल सॉर के Morphology of Landscape तक, (iv) मानव-पर्यावरण अन्तर्सम्बन्ध से विशिष्ट एवं विविध मानव समाजों का स्वरूप (regional geography) 1953 शेफर तक, (v) मानवीकृत पृथ्वी की सतह के आर्थिक सूक्ष्म विश्लेषण से सैद्धांतिक परिणाम ज्ञात करना (theoretical explanations by (humanised) spatial analysis) 1968, (vi) मानवीकृत पृथ्वी की सतह की मानव आचार जनित व्याख्या करना (behavioural explanations) 1970, (vii) पृथ्वी की सतह को उसके निवासियों की दृष्टि से समझना तथा मानव-अभिकरण को केन्द्र में रखना (humanistic geography and focus on human agency) 1980 तक (viii) मानव के लिये प्रासंगिक विषयों पर ध्यान-केन्द्रण (focus on relevant issues for human societies and Marxist geography) 1990 तक, (ix) वास्तविक जीवन की सूक्ष्म विविधताओं पर ध्यान-केन्द्रण के लिये पर्व के सभी दृष्टिकोणों का उपयोग (focus on variations of real-life world and use of all previous traditions) वर्तमान भूगोल जो 1990 तथा 2001 के दशक का उत्तर-आधुनिकवादी भूगोल है। यह एकीकृत विषय है जो प्रत्येक भौगोलिक चिन्तन परम्परा के सर्वोत्तम तत्वों को जोड़ता है, चाहे वह प्रादेशिक या क्रमबद्ध हो, आगमनिक या निगमनिक हो अथवा मानववादी या क्रिटिकल मार्क्सवादी हो। मानव भूगोलवेत्ताओं की वर्तमान पीढ़ी इस एक मत की है कि भूगोल के अपने बनने के काल में जो विपरीत दृष्टिकोण प्रकट हुये वे संसार के जीवन की सम्पूर्णता को देखने के मात्र भिन्न-भिन्न लेकिन पूरक दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिये इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण विशाल मानव-पर्यावरण तन्त्र को बेहतर समझ में योगदान करता है तथा वह सभी दृष्टिकोण भूगोल में अनुसंधानकर्ता को समाज की सेवा के लिये अनुसंधान करने के बेहतर उपकरण प्रदान करते हैं (Dikshit, 1999, 13)।

भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल में भूगोल का द्विविभाजन
(Physical Geography and Human Geography: Dichotomy of Geography)

ग्रीक तथा रोमन भूगोल में, पृथ्वी के सतह की मानव सम्बन्धी तत्वों को भी शेष प्राकृतिक तत्वों की ही तरह वर्णन में सम्मिलित किया जाता था। स्ट्रैबो ने एक ही भूगोल की रचना की। आधुनिक जर्मन भूगोल भी मुख्यत: एक ही विषय रहा है। कान्ट, हम्बोल्ट तथा रिट्टर ने भूगोल के अपने योगदान में भौतिक तथा मानव तत्वों को समान रूप से सम्मिलित किया था। हम्बोल्ड्ट तथा रिट्टर ने अपने-अपने विश्व भूगोल क्रमश: कॉसमॉस तथा अर्डकुण्डे में पृथ्वी के सभी विविध तत्वों में एकता खोजने का सफल प्रयास किया था। लेकिन हम्बोल्ड्ट का झुकाव प्राकृतिक तत्वों की ओर अधिक था जबकि रिट्टर का मानव सम्बन्धी तत्वों की ओर। यद्दपि उन्होंने भौतिक एवं मानव तत्वों को अलग वर्गों के रूप में नहीं सोचा, लेकिन उनके तुरन्त बाद के भूगोलवेत्ताओं ने इस मौलिक झुकाव को आधार बनाकर भूगोल के विभाजन का विचार किया।

रैटजेल की ऐन्थ्रोपोजियोग्राफी 1882 से पूर्व भौताकृति (physiography), जो बाद में भूआकृति विज्ञान (geomorphology) कहलाया, का पर्याप्त विकास हुआ तथा मानव पक्षों की भारी उपेक्षा हुई। रेटजेल ने ऐन्थ्रोपोजियोग्राफी की रचना कर मानव भूगोल को अलग अस्तित्व दे दिया तथा 1880 के दशक से भूगोल का भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल में स्पष्ट विभाजन हो गया। यह विभाजन उसके बाद कभी समाप्त नहीं हुआ।

डार्विनवाद के प्राकृतिक कारणों के महत्व के ज्ञान के बाद प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा अधिकाधिक सूक्ष्म ज्ञान की तलाश में विषयों के रूप में ज्ञान के विभिन्न भागों का विभाजन तथा विषयों का उपविभाजन होता रहा। विषयों के सूक्ष्म तत्वों के ज्ञान के लिये

परिचय (Introduction)

भूगोल के दोनों बड़े भागों का उपविभाजन हुआ तथा वे विश्वभर में विश्वविद्यालय तन्त्र में स्थापित हो गये।

बीसवी शताबदी के प्रारंभिक वर्षों से ही फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ने मानव भूगोल की पुस्तकें प्रकाशित कीं। 1898 में सॉरबॉन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनने के बाद अपने द्वारा स्थापित पत्रिका Annales de Geographie में ब्लॉश ने मानव भूगोल पर जो लेख लिखे वे मानव भूगोल की उसकी प्रसिद्ध पुस्तक Human Geography (Geographie de Humaine), 1921 में प्रकाशित हुई। मानव भूगोल पर अन्य फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ने पुस्तकों की रचना की। मानव भूगोल की ऐसी ही पुस्तकें अमेरिकी भूगोलवेत्ताओं (जैसे हंटिंगटन) ने लिखीं। धीरे-धीरे भौतिक भूगोल की तुलना में मानव भूगोल को अधिक महत्व मिलने लगा। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद तो भूगोल का तात्पर्य मानव भूगोल ही हो गया तथा उसकी विभिन्न स्तरों की कई शाखायें बन गईं। भौतिक भूगोल का महत्व चाहे सीमान्त हो गया हो, लेकिन उसका अस्तित्व अब तक बना रहा– मुख्यत: भूआकृति विज्ञान का। भौतिक भूगोल के जनक समझे जाने वाले पैशेल की 1870 में प्रकाशित पृथ्वी के सतह की आकारिकी के भूगोल तथा 1899 में भूआकृति के जनक डब्ल्यू. एम. डेविस के दी जियोग्राफिकल साइकिल (The Geographical Cycle, Davis, 1899) के प्रकाश के बाद, पूरी एक शताब्दी में वर्तमान भूगोल मानव भूगोल की ओर अधिकाधिक झुकता गया है। यह असन्तुलित दशा अब सुधार के लिये तैयार है तथा अब भौतिक भूगोल में रुचि लेने की परिपक्व सलाह विभिन्न अकादमी मंचों से मिल रही है। पर्यावरण पर प्रथम विश्व सम्मेलन, 1972 (स्टॉकहोम, स्वीडन), 1992 का पृथ्वी सम्मेलन (रियो डि जेनेरियो, ब्राजील), वार्सा (पोलैण्ड) सम्मेलन, 2013 तथा पर्यावरण पर अन्य विभिन्न सम्मेलन, पर्यावरण की खतरनाक ढंग से बिगड़ती दशा के संकेत हैं। क्योंकि मानव-विकास पर्यावरण के स्वास्थ्य से जुड़ा है, इसलिये अब उसको पुष्ट बनाये रखने के लिये भौतिक भूगोल के बढ़ते महत्व की ध्वनियां भौगोलिक जगत में सुनाई पड़ने लगी हैं। सम्भवत: कुछ ही वर्षों में भूगोल पुन: दोनों भूगोलों में संतुलन बना पायेगा।

क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रादेशिक भूगोल
(Systematic Geography and Regional Geography)

प्राकृतिक विज्ञान (natural sciences), जो प्राकृतिक तत्वों का अध्ययन करते हैं, वे विश्व के तत्वों का एक-एक कर गहन अध्ययन करते हैं। वे सामान्यत: किसी विषय को उसके अलग-अलग संघटकों (constituent) में विभाजित कर सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तर तक विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसे क्रमबद्ध विधि (systematic method) कहते हैं। प्राकृतिक विज्ञान इस कार्यविधि में सफल रहे हैं तथा ज्ञान की शुद्धता में वृद्धि होती रही है। भूगोल का एक भाग भौतिक भूगोल, प्राकृतिक तत्वों से सम्बन्धित है। यह भौतिक भूगोल की भी उचित विधि है। हम्बोल्ड्ट, जो भौतिक भूगोल में, (प्राकृतिक तत्वों से सम्बन्धित है। यह भौतिक भूगोल की भी उचित विधि है। हम्बोल्ड्ट, जो भौतिक भूगोल में, (प्राकृतिक विज्ञानों में शिक्षित होने के कारण) अधिक रुचि लेता था, ने भौतिक भूगोल के तत्वों का अध्ययन किया इसलिये अपनी भूगोल की महान पुस्तक Kosmos-Sketch of a Physical Description of the World को क्रमबद्ध विधि से प्रस्तुत किया। इस विधि में एक-एक विषय (topic) का सम्पूर्ण पृथ्वी के सम्बन्ध में या सम्पूर्ण अध्ययनगत क्षेत्र, जैसे किसी एक देश, के सम्बन्ध में विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। इसलिये इस विधि को टोपिकल विधि भी कहते हैं। इसमें सम्पूर्ण क्षेत्र में केवल एक विषय पर ध्यान केन्द्रित कर उसकी अधिकतम जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

इससे भिन्न प्रादेशिक विधि (regional method) में सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रदेशों में विभाजित कर प्रत्येक प्रदेश के सभी तत्वों, प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक (अर्थात् मानव-सम्बन्धी) का संश्लेषण किया जाता है। उनके पारस्परिक सम्बन्धों को समझा एवं प्रस्तुत किया जाता है। रिट्टर की शिक्षा इतिहास में होने के कारण, वह पृथ्वी की सतह पर मानव एवं तत्वसम्बन्धी तत्वों में भी पर्याप्त रुचि रखता है। इसलिये उसने पृथ्वी का अपना प्रसिद्ध भूगोल Erdkunde— The Science of the Earth in Relation to Nature and History of Mankind or General Comparative Geography as the Solid Foundation for the Study of, and instruction in, Physical and the Historical Sciences प्रादेशिक विधि से ही समझा तथा प्रस्तुत किया। यह विधि प्रदेश की यथावत तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास करती है तथा केवल भौगोलिक विज्ञान ही ऐसी विधि का प्रयोग करते हैं क्योंकि तत्वों की संगता (association) का आधार पृथ्वी की सतह का समांगता (homogeneity) वाला क्षेत्र (प्रदेश) होता है।

भूगोल में ये दोनों विधियां प्रचलन में आई तथा अब तक अस्तित्व में हैं। ये विधियां एक दूसरे की पूरक भी हैं तथा क्षेत्र विशेष का पूर्ण भूगोल प्रस्तुत करती हैं। ओ.एच.के. स्पेट की पुस्तक India, Pakistan and Ceylon का पहला खण्ड इन देशों का क्रमबद्ध तथा दूसरा खण्ड प्रादेशिक विधि से प्रस्तुत अध्ययन है, जो इन विधियों के प्रयोग का अच्छा उदाहरण है।